गोपाल राजू
रूड़की (उत्तराखंड)

सात दिन में पायें जीवन के सात सुख और पायें सौभाग्य

एक बहुत ही सरल प्रयोग लिख रहा हूँ। सौभाग्य की कामना रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री यह प्रयोग कर सकता है। प्रयोग शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। वैसे इस प्रकार के प्रयोगों के लिए मैं प्रायः ऐसा दिन चुनता हूँ कि उसकी समाप्ति ठीक दीवाली अथवा होली के दिन हो जिससे कि अन्तिम क्रिया इन दिनों की पूजा के साथ ही सम्पन्न हो जाए। तंत्र में इन दिनों का विशेष महत्व है।

यह मैं पाठकों की अपनी सुविधा पर छोड़ता हूँ। कि वह किस समय से प्रारम्भ करें। सोमवार से लेकर रविवार तक यह प्रयोग कुल सात दिन का होता है। प्रत्येक दिन रात्रि को सोने से पूर्व कुछ सिक्के सिरहाने रखकर सोएं और प्रातः वह किसी दरिद्र को अथवा सुपात्र को दान कर दें। इस दान का विधान इस प्रकार है।

यदि आप धन सम्पदा आदि पक्ष को लेकर यह प्रयोग कर रहे हैं तो

रात्रि को पैसे रखकर प्रातः यह दान कर दें।

स्वास्थ्य के लिए यदि वह प्रयोग किया जा रहा है तो यह पैसे किसी ऐसे स्थान अथवा व्यक्ति को दान करें जो उनका उपयोग निःस्वार्थ किसी की चिकित्सा के लिए कर रहा हो।

दाम्पत्य सुख के लिए करने वाले प्रयोग में इन पैसों से उस पूरे सप्ताह में किसी सुहागिन स्त्री को किसी दिन भोजन करवा दें।

बच्चे की शिक्षा सम्बन्धी चिन्ता के लिए यह पैसा किसी असहाय विद्यार्थी की सहायता में लगा दें।

विवाह न होने सम्बन्धी अड़चन के लिए इन पैसों से प्रातः गुड़ खरीद कर सातों दिन रोटी पर रखकर गाय को स्वयं खिला दें।

नपुंसकता दूर करने के लिए यह पैसे एक साथ जमा करके किसी भी दिन हिजड़े को दान करके उसी दुआएं लें।

कोढ़ी को किया गया दान न्याय सम्बन्धी कार्यों में शुभ सिद्ध होता है। अकारण जेल गए किसी व्यक्ति के लिए यह प्रयोग यदि उसके निकट खून के सम्बन्धी द्वारा करवा दिया जाए तो उसके लिए सौभाग्यशाली सिद्ध होता है।

इन पैसों से एक कम्बल खरीद कर रख लें। सर्दी में किसी अमावस्या की ठिठुरती हुई रात्रि में यह चुपचाप से किसी सोते हुए असहाय निरीह व्यक्ति के ऊपर डाल दें।

नित्य प्रातः इन पैसों से गुड़ चना खरीद कर बन्दरों को खिला दें, चावल खरीद कर चिड़ियों को डाल दें अथवा बूरा-चीनी तथा

आटा खरीद कर चींटियों के लिए डाल दिया करें। इन सबसे सौभाग्य में वृद्धि होती है।

अपने प्रयोग के लिए सोमवार को नाग और नागिन का एक जोड़ा चांदी देकर किसी सुनार से बनवा कर घर ले आएं। अगले दिन अर्थात् मंगलवार को नौ छेद वाले तांबे के सिक्के जमा कर लें। यदि यह सुलभ न हों तो स्वयं ही तांबे की पतली शीट से यह काटकर बनवा लें। बुधवार को पांच पीली कौड़ी जमा कर लें। गुरुवार को तीन पीतल के सिक्के जमा कर लें। यदि यह उपलब्ध न हों तो तांबे की तरह यह भी पीतल की शीट में से सिक्के के आकार के बनवा लें। शुक्रवार को चांदी की छोटी-छोटी तीन जोड़ी अर्थात् छह पादुकाएं सुनार से बनवा लें। शनिवार के दिन लोहे के 8 छोटे-छोटे त्रिशूल बनवा कर जमा कर लें।

अन्तिम दिन अर्थात् रविवार को एक स्वच्छ शीशी में एक चम्मच शहद लेकर बाकी में गंगाजल भर लें। अब ऊपर जमा की हुई सब वस्तुएं भी एक-एक करके शीशी में छोड़ दें और शीशी का ढक्कन अच्छी तरह से बन्द कर दें। सारा सामान इस आकार का रखें कि वह शीशी में सरलता से समा जाए। यदि आप सामान बड़ा ले रहे हैं तो उसी के अनुसार आपको शीशी भी बड़ी लेनी पड़ेगी। यह सब आपकी सुविधा पर ही छोड़ता हूँ कि वस्तुएँ किस आकार की जमा करें जिससे कि वह शीशी में अच्छी तरह समा जाएँ।

इस शीशी की श्रद्धाभाव से जैसे भी आप पूजा-अर्चना कर

सकते हैं, कर लें और इसे उठाकर घर, दुकान अथवा अन्य कहीं किसी पवित्र स्थान में रख लें। यह ऐसे ही रखी रहनी है। इसके बाद इसका कुछ भी नहीं करना है।

यदि आप नया घर बनवा रहे हैं तो यह मुख्य द्वार के दायीं ओर जमीन में भी दबा सकते हैं। यदि मकान आपने बना बनाया खरीदा है तो यह मुख्य द्वार के बायीं ओर दबा दें। इस सरल प्रयोग के बाद से सौभाग्य का आगमन प्रारम्भ हो जायेगा, अनेक बार लोगों के अनुभव में यह देखा जा चुका है।